B.A. III
संस्कृत (आनर्स)
पत्र - सप्तम

समास

डॉ० सावित्री सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग -
रा० म० का० महाविद्यालय

(ख) तत्पुरुष → जिसमें प्रायः उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी गयी है — "प्रायेणोत्तर पदार्थ प्रधानस्तत्पुरुष तत्पुरुषः" जैसे → राज्ञः पुरुषः इति राजपुरुषः।

(ग) कर्मधारय → कर्मधारय समास तत्पुरुष का ही एक भेद है अतः इसमें भी प्रायः उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है। अन्तर यह है कि इसमें विशेष्य और विशेषण का समास होता है। जैसे — नीलम् च तत् उत्पलम् इति नीलोत्पलम्।

द्विगु → द्विगु समास कर्मधारय का ही एक भेद है। विशेष्य और विशेषण के समास में यदि विशेषण संख्यावाचक हो तब उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे — पञ्चानां गवां समाहारः इति पञ्चगवम्।

(घ) बहुव्रीहि बहुव्रीहि समास → जिस समास में अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यह समास अनेक पदों का भी होता है। इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी गयी है —
"प्रायेणाऽन्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः"
जैसे → पीतं अम्बरं यस्य सः पिताम्बरः।
यहाँ पर अन्य अर्थ कृष्ण की प्रधानता है।

(ङ) द्वन्द्व → इस समास में सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है। समास दो या दो से अधिक पदों का होता है। इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी गयी है —
"प्रायेणोभय पदार्थ प्रधानो द्वन्द्वः" इसकी परिभाषा इस प्रकार से भी दी गयी है —
सूत्र "चार्थे द्वन्द्वः" — अर्थात् च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का समास होता है। और समस्त पद अपने पदों के अनुसार द्विवचन या बहुवचन के रूप को लेता है।

जैसे → रामः च लक्ष्मणः च = रामलक्ष्मणौ।

रामः च लक्ष्मणः च भरतः च = रामलक्ष्मणभरताः।

(10) सूत्र → अव्ययीभावेचाऽकाले → अव्ययीभाव समास में "सह" का स आदेश हो जाता है। जैसे —
हरेः सादृश्यं = स हरि, चक्रे
चक्रेण युगपत् = स चक्रम्।
सूत्र के अनुसार काल अर्थात् समय के अर्थ स आदेश नहीं होता है, सह ही रहता है।
जैसे — पूर्वाह्णम् सह इति सहपूर्वाह्णम्।

(11) सूत्र → उपमानानि सामान्यवचनैः → उपमावाचक सुबन्त का समान धर्म वाचक सुबन्त के साथ समास होता है इसे उपमान कर्मधारय तत्पुरुष भी कहते हैं। जैसे —
घन इव श्यामः इति घनश्यामः।

(12) सूत्र → ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य → अजन्त प्रातिपदिक का नपुंसकलिंग में ह्रस्व हो जाता है। अर्थात् नपुंसक में प्रातिपदिक का अंतिम अर्थात् समस्त पद का अंतिम अक्षर अगर दीर्घ हो तो वह ह्रस्व कर दिया जाता है। ए और ऐ के स्थान में इ बन जाता है, ओ तथा औ के स्थान में उ बन जाता है और "आ" "अ" बन जाता है। जैसे → गङ्गायाः समीपे = उपगंगम्।

(13) सूत्र → अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः → अव्ययीभाव समास के अंत में यदि शरत् इत्यादि शब्द आता है तब इन शब्दों में "टच्" प्रत्यय लगता है। और "टच्" प्रत्यय के लगने पर शब्द अकारान्त हो जाते हैं।
जैसे — शरदः समीपम् = उपशरदम्।

Scanned by CamScanner

१४

(१४) सूत्र → अनेकमन्यपदार्थे → या (अनेकमन्यपदार्थे अनेकं प्रथमान्तमन्यस्य पदस्यार्थे वर्तमानं वा समस्यते स बहुव्रीहिः)
→ बहुव्रीही समास की व्याख्या यह सूत्र करता है। अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्तों का समास होता है। यह एक सामान्य सूत्र है। जैसे—
नीलम् अम्बरं यस्य सः = नीलाम्बरं।

(१५) सूत्र → उपमितं व्याघ्रादिभिः ~~सामान्य~~ सामान्याप्रयोगे →
उपमेय वाचक सुबन्त पदों का व्याघ्र आदि उपमान वाचक पदों के साथ समास होता है। किन्तु इस समास में विशेष बात यह है कि जब साधारण धर्मबोधक शब्द का प्रयोग नहीं होता है तभी यह समास बनता है। इसे उपमित कर्मधारय तत्पुरुष समास भी कहते हैं। जैसे— नरः सिंहः इव इति नरसिंहः।
अधरः पल्लवः इव इति अधरपल्लवः
उपमान और उपमेय के साधारण धर्म बोधक शब्द के रहने पर इनका समास नहीं होता है।
जैसे— नरः सिंहः इव = शूरः।

१६
(१६) कर्तृकरणे कृता बहुलम् → कर्ता और करण में तृतीया तदन्त पद का कृदन्त के साथ विकल्प से समास होता है।
जैसे → हरिणा त्रातः इति हरित्रातः ~~...~~ या हरिणा त्रातः
नखैः भिन्नः इति नखभिन्नः या नखैः भिन्नः।

(१७) सूत्र → तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च → तद्धितार्थ के विषय में उत्तरपद रहने से और जब समाहार वाच्य हो तब दिशावाचक और संख्यावाचक का समास होता है। ऐसा समानाधिकरण सुबन्त के साथ होता है।
जैसे — पूर्वस्याम् शालायाम् भवः इति पौर्वशालः।

Scanned by CamScanner

सामान्य रूप में दिङ्वाचक का समाहार अर्थ में समास नहीं होता अतः दिङ्वाचक सुबन्त के तद्धितार्थ के विषय में और अस्पष्ट रहने से भी समास होता है। यद्यपि ऐसे उदाहरण अत्यंत ही अल्प हैं।

(9) सूत्र → कुगतिप्रादयः → कुगति संज्ञक और प्र आदि का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। जैसे — कुत्सितः पुरुषः इति कुपुरुषः।
प्रगतः आचार्यः इति प्राचार्यः।

सूत्र में "प्र" आदि का अलग से उल्लेख किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि जिस क्रिया के साथ "प्र" आदि का हो उसी के प्रति वे गति संज्ञक होते हैं।

✓ (10) सूत्र → चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख रक्षितैः —

चतुर्थ्यन्त के अर्थ के लिये अर्थात् चतुर्थी विभक्ति के अर्थ के लिये जो वस्तु उसके वाचक पद के साथ रहे तथा अर्थ (के लिये) बलि (उपहार), हित (कल्याण) सुख और रक्षित (रखा हुआ) इन पदों के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। जैसे — यूपाय दारु इति यूपदारु।

सूत्र में तदर्थ शब्द का प्रयोग किया गया है। तदर्थ शब्द का अर्थ प्रकृति-विकृति भाव है इससे यह स्पष्ट होता है कि चतुर्थ्यन्त का अर्थ विकार और उत्तर पद का अर्थ प्रकृति होना चाहिए तभी सूत्र उस सूत्र से समास हो सकता है। यूपदारु में "दारु" प्रकृति है और "यूप" उसका विकार है। अतः यूपाय दारु पद समस्त होकर यूपदारु बना। रन्धनाय स्थाली में समास नहीं हो सकता क्योंकि स्थाली से रन्धन नहीं बनता। स्थाली द्रव्य है और रन्धन क्रिया। प्रकृति विकृति भाव

Scanned by CamScanner